(i)	Title of Research Work	:	*'हिन्द स्वराज'* के *'शिक्षा'* अध्याय व *'मंगल प्रभात'* के परिप्रेक्ष्य में *'नीति शिक्षा'* की संकल्पना व उसका समाधानः गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन
(ii)	Name of scholar	:	PRIYANKA THAKKAR
(iii)	Subject	:	EDUCATION
(iv)	Registration No.	:	21914017
(v)	Name of Guide	:	**Dr. Surendra Kumar Tiwari** (94240-56999,07285-277853) principal.gbyssm@gmail.com
(vi)	Designation of Guide	:	Principal, Gulabbai Yadav Smriti Siksha Mahavidyalaya, Vidya Vihar, Borawan, Khargone [M.P.] PIN: 451228
(vii)	Guide working place	:	Gulabbai Yadav Smriti Siksha Mahavidyalaya Vidya Vihar, Borawan, Khargone [M.P.] PIN: 451228

‘*हिन्द स्वराज*’ के ‘*शिक्षा*’ अध्याय व ‘*मंगल प्रभात*’ के परिप्रेक्ष्य में ‘*नीति शिक्षा*’ की संकल्पना व उसका समाधानः गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबडेवाला विश्वविद्यालय

की

शिक्षा विषय में

पीएच.डी. उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध प्रस्ताव

द्वारा

प्रियंका ठक्कर

पंजीयन संख्या 21914017

निर्देशाधीन

डॉ. सुरेन्द्र कुमार तिवारी

निर्देशक पंजीयन संख्या .....

शिक्षा संकाय

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबडेवाला विश्वविद्यालय

विद्यानगरी, झुंझनू, राजस्थान–333001

वर्ष 2015

‘हिन्द स्वराज’ के *‘शिक्षा’* अध्याय व *‘मंगल प्रभात’* के परिप्रेक्ष्य में *‘नीति शिक्षा’* की संकल्पना व उसका समाधानः गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन

A

RESEARCH PROPOSAL

SUBMITTED TO THE

SHRI JAGDISH PRASAD JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY,

FOR THE DEGREE

OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY

IN

EDUCATION

By

PRIYANKA THAKKAR

Registration No. 21914017

UNDER THE GUIDANCE OF

Dr. Surendra Kumar Tiwari

Guide Registration No.

DEPARTMENT OF EDUCATION

SHRI JAGDISH PRASAD JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY,

VIDYANAGARI, JHUNJHUNU, RAJASTHAN-333001

YEAR 2015

(i)	Title	:	‘हिन्द स्वराज’ के ‘शिक्षा’ अध्याय व ‘मंगल प्रभात’ के परिप्रेक्ष्य में ‘नीति शिक्षा’ की संकल्पना व उसका समाधानः गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन
(ii)	Name of scholar	:	PRIYANKA THAKKAR
(iii)	Registration No.	:	21914017
(iv)	Subject	:	EDUCATION
(v)	Guide Name	:	**Dr. Surendra Kumar Tiwari** (94240-56999,07285-277853) principal.gbyssm@gmail.com
(vi)	Guide Designation	:	Principal, Gulabbai Yadav Smriti Siksha Mahavidyalaya, Vidya Vihar, Borawan, Khargone [M.P.] PIN: 451228
(vii)	Guide working place	:	Gulabbai Yadav Smriti Siksha Mahavidyalaya Vidya Vihar, Borawan, Khargone [M.P.] PIN: 451228

Signature of student

Signature and Seal of Guide

डॉ.सुरेन्द्र कुमार तिवारी
प्राचार्य
स्व.गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा
महाविद्यालय,बोरावां(खरगोन)

'हिन्द स्वराज' के *'शिक्षा'* अध्याय व *'मंगल प्रभात'* के परिप्रेक्ष्य में *'नीति शिक्षा'* की संकल्पना व उसका समाधानः गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन

नामक

शोध प्रस्ताव

अन्तर्गत

अनुक्रमणिका

प्रमाणपत्र

		पृष्ठ संख्या
1.0.0	परिचय	01
2.0.0	साहित्य का सर्वेक्षण	05
3.0.0	शोध का उद्देश्य	14
4.0.0	शोधविधि तथा कार्ययोजना	16
5.0.0	शोध की उपयोगिता	16
6.0.0	शोध का सीमांकन	16
7.0.0	संदर्भ	17

'हिन्द स्वराज' के *'शिक्षा'* अध्याय व *'मंगल प्रभात'* के परिप्रेक्ष्य में *'नीति शिक्षा'* की संकल्पना व उसका समाधानः गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन

1.0.0 परिचय

स्वराज्य आंदोलन को मोहनदास करमचंद गाँधी (जिन्हे महात्मा गाँधी या गाँधी के नाम से भी जाना जाता है) का नेतृत्व मिला गया था। गाँधी की प्रेरणा से देश में राष्ट्रीयता की लहर चल पड़ी थी। महात्मा गाँधी ने स्पष्ट कहा था कि उनके राष्ट्रीय आंदोलन का एक प्रमुख अंग शिक्षा–सुधार है।

गाँधी के शिक्षा संबंधी विचार किताबी ज्ञान पर आधारित नहीं थे। उनकी थी कि सच्ची शिक्षा माता–पिता ही दे सकते है। अतः उन्होने अपने आश्रम में अपने को पिता के स्थान पर रखकर कार्य आरंभ किया। उनकी धारणा यह भी थी कि सच्ची शिक्षा का माध्यम चरित्र निर्माण है, अतः टालस्टॉय आश्रम में चरित्र निर्माण पर बल दिया।

गाँधी को राष्ट्रीय विद्यापीठों की स्थापना की आवश्यकता महसूस हुई। परिणाम स्वरूप महाराष्ट्र में तिलक विद्यापीठ, बिहार में बिहार विद्यापीठ, उत्तरप्रदेश में काशी विद्यापीठ और गुजरात में गुजरात विद्यापीठ स्थापित कर राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति में समर्थ नागरिकों का निर्माण करने का संकल्प लिया गया। इन विद्यापीठों के कार्य में शिक्षण योजनाऐं इस प्रकार बनाई गई कि इसके प्रत्येक कार्य से छात्रों में देश–प्रेम तथा राष्ट्रीयता की प्रेरणा प्राप्त हो। पाठ्यक्रम में भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता और भारतीय इतिहास को प्रमुख स्थान दिया गया। शिक्षक प्रायः स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे। इन शिक्षकों के आचरण में सच्चरित्रता, वाणी में तेजस्विता, व्यवहार में कर्म, व मन में देशप्रेम व्याप्त था। शिक्षण व्यवसाय इन शिक्षकों के लिए जीविका का आधार न था। वे शिक्षा में क्रांति लाना चाहते थे।

अतः उन्होने नयी शिक्षा का विस्तृत एवं महत्वपूर्ण विचार देश को दिया।

विश्व के शिक्षाविद्वानो ने शिक्षा को इस प्रकार व्यक्त किया हैः प्रत्येक बालक में जन्मजात (विशेषतः वंशानुक्रम प्रभावित) कुछ शक्तियॉं व प्रकृत्तियॉं होती है, जिनसे और भौतिक व सामाजिक वातावरण (नियन्त्रित व अनियन्त्रित) के प्रभाव से बच्चों का विकास होता है। संकुचित रूप से, एक पूर्व नियोजित योजना के अनुसार बालक के सामने एक विशेष प्रकार के नियन्त्रित वातावरण को प्रस्तुत करके एक निश्चित ज्ञान को निश्चित विधि द्वारा निश्चित काल में समाप्त करना शिक्षा है। व्यापक दृष्टि से, शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली क्रिया है। किन्तु, गाँधी ने शिक्षा का तात्पर्य इस प्रकार व्यक्त किया है– "बालक और मनुष्य के शरीर, मन और अंतरात्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का विकास है।" उनकी पुस्तकों में नई तालीम के निम्न तत्वों को स्थान दिया गयाः

1. नई तालीम से हममें आशावाद का संचार होना चाहिए।
2. सारी पढ़ाई किसी मूल उद्योग धंधे से संबंधित होना चाहिए।
3. हाथों द्वारा मस्तिष्क का विकास किया जाना चाहिए।
4. शिक्षा से भले और बुरे के मध्य अंतर करना सिखाना चाहिए।
5. नई तालीम को एक नयी सामाजिक व्यवस्था को प्रसारित करना चाहिए।
6. आरंभ से ही बच्चों को अंग्रेजी सीखाने से उन पर अनावश्यक बोझ बड़ता है।
7. नई तालीम की जड़े भारतीय संस्कृति और लोगों के जीवन में होनी चाहिए।

8. भारत कभी भी धर्मविहीन नही होगा। सभी धर्मो और मतों में सदभाव और एकता होनी चाहिए।

9. नई–तालीम का आध्यत्मिक पक्ष यह है कि ज्ञान और कर्म एक है।

10. स्वराज का अर्थ, सत्ता परिवर्तन नहीं अपितु राजनैतिक नियंत्रण बदलने से है।

11. ब्रह्मविद्या और उद्योगों को नई शिक्षा में शामिल करना होगा।

12. नई तालीम को सरकार निरपेक्ष होना चाहिए।

शिक्षा के सम्बन्ध में गांधी के विचारों का वृहद ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा में साहित्य का अध्ययन करने के उपरान्त यह पाया गया कि, सिवाय एक स्थान को छोड़कर (यानि उनकी रची हुई पुस्तक "हिन्द स्वराज"), गांधी ने विशेषतः "शिक्षा" तथा "नीति शिक्षा" के सम्पूर्ण विषय पर प्रकाश डालने हेतु कोई साहित्य की रचना नही की. बुनियादी शिक्षा/नई तालीम में भी "नीति शिक्षा" के बारे में विवरण नही पाया।

गाँधी जी ने उनके द्वारा रचित 20 अध्यायों की 'हिन्द स्वराज' पुस्तक में अध्याय–18 में विशिष्टतः "शिक्षा" पर अपने विचार लिखे हैं. इसमें शिक्षा के सम्बन्ध "**नीति**" शब्द कई बार आया है, जैसा नीचे लिखा हैः– शिक्षा का साधारण अर्थ अक्षर–ज्ञान ही होता है; .....। लेकिन पश्चिम के असर, कि लोगों को शिक्षा देनी चाहिये, के कारण– बिना आगे–पीछे की बात सोचे– ...., **नीति** के नियम को समझने और उनका पालन करने वाले को अक्षर–ज्ञान देने की जरूरत नहीं है क्यों कि अक्षर–ज्ञान से {जिसका अच्छा उपयोग भी हो सकता है और बुरा उपयोग भी हो सकता है} दुनिया को फायदा के बदले नुकसान ही हुआ है।

प्रायमरी–प्राथमिक शिक्षा या ऊंची शिक्षा से हम मनुष्य नहीं बनते–उससे हम अपना कर्तव्य नहीं जान सकते।

जब हमने **नीति** की नींव मजबूत बना ली हो, तब अगर हमें अक्षर–ज्ञान पाने की इच्छा हो, तो उसे पाकर हम उसका अच्छा उपयोग कर सकते हैं। हमारे पुराने स्कूल ही काफी हैं। वहॉ **नीति** को पहला का स्थान दिया जाता है। वह सच्ची प्राथमिक शिक्षा है। उस पर हम जो इमारत खड़ी करेंगें वह टिक सकेगी।

जो लोग अंग्रेजी पढ़े हुए हैं उनकी संतानों को पहले तो **नीति** सिखानी चाहिये। बहुत से शास्त्र सीखने का दंभ और वहम हमें छोडना होगा। सबसे पहले तो धर्म की शिक्षा या **नीति** की शिक्षा दी जानी चाहिये।

धर्म की शिक्षा बेशक मुश्किल काम है। धर्म के आचार्य दंभी और स्वार्थी मालूम होते हैं। उनके पास पहुॅच कर हमें नम्र भाव से उन्हे समझाना होगा। लेकिन उनमें अगर सद्बुद्धि पैदा न हो, तो अंग्रेंजी शिक्षा के कारण हममें जो जोश पैदा हुआ है उसका उपयोग करके हम लोंगों को **नीति** की शिक्षा दे सकते हैं। यह कोई बहुत मुश्किल बात नहीं है। पश्चिम की सभ्यता के निकाल बाहर करने की ही हमें कोशिश करनी चाहिये। दूसरा सब अपने–आप ठीक हो जायगा।

लेकिन उपरोक्त वर्णित गाँधी जी के विचारों में नीति शब्द का आशय अस्पष्ट है, या कह सकते हैं कि नीति शब्द का आशय अनुपलब्ध है, और इस कारण से गाँधी के विचारों के अनुसार शिक्षा व नीति शिक्षा का पूर्ण अर्थ भी नही समझा जा सकता है। ऐसी स्थिति में गाँधी द्वारा शिक्षा के सम्बन्ध में भिन्न– भिन्न स्थानों व भिन्न–भिन्न समयों पर व्यक्त विचारों व उनके द्वारा किये गये कार्यो का विधिवत् अध्ययन करके उनके अनुसार शिक्षा व नीति का वास्तविक अर्थ जाना जा सकता है। यहाँ पर पूर्व में कहा गया है कि उन्होने अपने आश्रम में अपने को पिता के स्थान पर रखकर कार्य आरंभ किया और टालस्टॉय आश्रम में चरित्र निर्माण पर बल दिया।

इसी प्रकार गाँधी ने वर्ष 1930 में यरवडा जेल में रहते हुए भी पत्रों द्वारा अपने आश्रमवासियों को शिक्षा दी थी, जोकि "मंगल प्रभात" नामक पुस्तक में लिखी हुई हैं। इसका भी अध्ययन करके उनके अनुसार नीति शिक्षा का वास्तविक अर्थ जाना जा सकता है। इस शोध का उद्देश्य भी यही है, और साथ–ही–साथ नीति शिक्षा का समाधान गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन द्वारा ज्ञात करना भी है। इस अध्ययन में विभिन्न विद्वानों, संस्थानों, सरकारों आदि द्वारा व्यक्त विचारों का अध्ययन भी सम्मिलित है।

2.0.0 साहित्य का सर्वेक्षण

(अस्थाना 2008)[1] ने भारत में टेलीविजन की धर्मनिरपेक्षता और धर्म विषयों को लेकर राष्ट्र निर्माण में इनकी भूमिका का अध्ययन किया। इस शोध के द्वारा अनुशंसा की गई कि टेलीविजन पर धर्म व धर्मनिरपेक्षता विषय पर रचनात्मक व सकारात्मक चर्चायें प्रदर्शित करना चाहिये।

(आफ्सटेड 1994)[22] ने आध्यात्मिक विकास को अस्तित्व हेतु अन्तदृष्टि प्राप्ति करने से सम्बन्धित बताया है तथा आाध्यात्मिक विकास को बच्चे की शिक्षा व मूलभूत शिक्षा का महत्वपूर्ण तत्व बताया और आध्यात्मिक विकास न होने से बच्चों, नवजवानों व समाज को होने वाली हानियों को बताया है।

(आफ्सटेड 1996)[23] ने शोध के परिणाम में आध्यात्मिक अनुभूति को अधिगम की पूर्वापेक्षा होना पाया और इसे शिक्षा होना पाया और सत्य के ज्ञान का साधन होना पाया।

(आफ्सटेड 2004)[24] ने आध्यात्मिक विकास को मानव के अभौतिक तत्व का, आत्मा का, व्यक्तित्व का, चरित्र का विकास बताते व स्वयं की पहचान, स्व–मूल्य, व्यक्तिगत अन्तर्दृष्टि, अथवा उद्देश्य का विकास बताया है।

(एन.सी.डी.पी.आई. 2006)[20] ने प्रकाशित किया है कि विभिन्न

समुदायों से प्राप्त अनुभवों के आधार पर शिक्षा शास्त्रियों ने चरित्र शिक्षा के निम्न क्रान्तिक अवयव पाये हैं : सामुदायिक सहभागिता, चरित्र शिक्षा नीति, परिभाषित गुण, एकीकृत पाठ्यचर्या, अधिगम, मूल्यांकन, व्यस्कों की प्रतिमान भूमिका, स्टाफ विकास, छात्र सहभागिता व कार्यक्रम संधारण।

(एन.जी.सी.ए. 2001)[21] ने 1996 के विधान में शामिल निम्न आठ विशेषताओं {साहस, श्रेष्ठ निर्णय, निष्ठा, दयालुता, दृढ़ता, आदर, उत्तरदायित्व, स्व–अनुशासन} को छात्रों में उत्पन्न करने हेतु चरित्र शिक्षा के अनुदेशन में शामिल करने को कहा है।

(एस.सी.ए.ए. 1996)[32] ने विश्वास; भय, आश्चर्य व रहस्य की समझ; अत्युत्तमता की अनुभूति का अनुभव; अर्थ व उद्देश्य की खोज; संबंध; सृजनात्मकता; तथा अनुभूतियों व मनोभावों को आध्यात्मिक विकास के पक्ष बताया है।

(क्राफोर्ड व अन्य 2006)[6] ने आसक्त संबंध, सामाजिक समर्थन, नैतिक व व्यवहार मार्गदर्शन, व्यक्तिगत विकास या परिवर्तन आदि के माध्यम से आध्यात्मिकता और धार्मिकता व्यक्ति का उत्थान हो सकने का पाया है।

(किंगडन व नाइट 2006)[15] ने शोध में पाया कि एक अच्छे जीवन या बुरे जीवन के आधार पर मूल्य सम्बन्धी मूल्याकंन से गरीबी की समझ उत्पन्न होती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि खुशहाली के बारे में किसी का एक विधि से स्वयं का अवलोकन, किसी अन्य विधि के अवलोकन की तुलना में कम त्रुटिपूर्ण हो सकता है, या अधिक मापनीय हो सकता है, या दोनो हो सकता है। अर्थात, लाभ या उपभोग आधारित और 'मूलभूत आवश्यकताएँ' व आन्तरिक मूल्यों के अनुसार कार्य करने की योग्यता आधारित, दोनो के आधार पर, गरीबी का अर्थ व्यक्त करना संकल्पनात्मक है, इनसे एक दूसरे की महत्ता व प्रासंगिकता तथा उनमे नीहित चरों का मूल्यांकन किया जा सकता है।

(कुमार 2014)[16] ने महात्मा गांधी के सत्याग्रह में मानव व अमानव के सम्बन्ध में शोध किया और पाया कि पशुओं के प्रति आनुभविक, संकल्पनात्मक तथा भाषिक सामर्थ्य रखने वालों में महात्मा गांधी के समतुल्य अन्य कोई नही था। गांधी ज्यादा हवाई यात्राओं के भी विरोधी थे।

(गाईर 2001)[9] ने कनफ्यूसियस, गांधी और सौन्दर्य मूल्य विषय पर शोध किया है। दोनों व्यक्ति हालॉकि राजनीति सुधारक थे, किन्तु मानव प्रकृति और स्व-समाज विश्व सम्बन्धों पर दोनों के विचार शिक्षाप्रदरूप से एक जैसे ही है। गांधी ने कभी भी शंकर के माया के सिद्यान्त को नही स्वीकार किया। गांधी ने आत्मा का ब्रह्म में लीन होने के मत को भी नही स्वीकारा। गांधी की सबसे अच्छी पहचान एक जैव-पूर्णता है जिसमें, लगभग कनफ्यूसियस के विवादों के अनुकूल भी, व्यक्ति अपनी निष्ठा समाज के अन्तरआश्रित जाल में परिरक्षित रखता है। दोनों ही मानव गरिमा पर विश्वास तथा दिव्य विधाता पर विश्वास के प्रति निष्ठा पर सन्तुलित भाव रखते हैं। दोनों के सत्य के प्रयोग की अलग-अलग विधि हैं। सत्य, शिव तथा सुन्दर के मूलभूत तथ्य पर वे दोनों ही अति सहमत हैं। तथ्यों व मूल्यों के विलयन के आधार पर वे दोनों सौन्दर्य मूल्य को मानते हैं, जो कि आन्तरिक नैतिक सौन्दर्य को पुरस्कृत करता है और इस कारण इसमें शिष्ट व्यवहार दिखता है, न कि सौष्ठव शरीर।

(चक्रवर्ती 2012)[5] ने कहा है कि विवेकानन्द, गांधी, टेगौर व नेहरू आदि द्वारा रचित साहित्य में वर्णित सभ्यता व संस्कृति को वर्तमान में कम महत्व दिया जा रहा हैं।

(जॉनसन 2015)[13] ने चरित्र शिक्षा को वृहद पारस्परिक सुधार प्रक्रिया तथा स्कूल समुदाय को उसकी अतिउत्तम क्षमता तक विकसित होने की संस्कृति कहा है।

(जैन 2010)[12] ने महात्मा गांधी और लॉरी बेकर, जो कि बर्मिघंम के वास्तुकार थे, के बारे में शोध की है। उन्होने पाया कि

बेकर महात्मा गांधी से मिले और इतने अधिक प्रभावित हुए कि भारत में ही रहने लगे। बाद में बेकर को 'घरेलू वास्तु के महात्मा गांधी' के नाम से जाना गया। बेकर ने गांधी के विचारों से प्रभावित होकर गरीबों के लिये सस्ते, सुलभ व आरामदायक आवासीय घरों की डिजायन तैयार की। बेकर की वास्तु वास्तव में संधारणीय है, सस्ती है, सामाजिक है तथा पर्यावरण के अनुकूल हैं।

(जोशी 2012)[14] ने महात्मा गांधी की ट्रस्टीशिप के दृष्टिकोण से नवउदारतावाद की चुनौती विषय पर अध्ययन किया। शोधकर्ता ने वर्तमान की हावी नवउदारता तथा मानव पूँजी बनाने की शिक्षा नीति का आलोचनात्मक वर्णन किया है। शोधकर्ता ने प्रभुत्ववादी नवउदारतावाद व दोषयुक्त अवधारणाओं की आलोचना की है। शोधकर्ता ने गांधी की अर्थनीति, जिसमें ग्रीड (तृष्णा, लालसा, लोभ) के बजाय नीड (आवश्यकता) को प्राथमिकता दी गयी है, को दृष्टि में रखते हुए शिक्षा देने की अनुशंसा की है।

(ठक्कर प्रियंका 2012)[36] ने अपने शोध में पायाः– (1) मनुष्यत्व/मानवता को अक्षुष्ण रखने की शक्ति या क्षमता जब ठीक–ठीक रूप से विकसित हो जाये, तब बच्चे को अतिरिक्त ज्ञान देना शुरू करना चाहिये। (2) सबसे पहले सच्ची प्रारंम्भिक शिक्षा बाद में कुछ और। बच्चे की सच्ची प्रारंम्भिक शिक्षा वही होनी चाहिये जैसा कि गांधी ने कहा है। (3) शारीरिक शिक्षा अनिवार्यता दी जाये। (4) गांधी का शिक्षा के द्वारा (पूर्ण मानव बनाने या) मनुष्य का सर्वांगीण विकास (शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास) किये जाने का विचार वर्तमान में पूर्णतः प्रासंगिक है। (5) धार्मिक शिक्षा आवश्यक है क्योंकि इससे मनुष्य के मूलभूत तीनों पक्षों – प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक (जिसमें अनिवार्य नियम, आचार–विचार–व्यवहार, आहार–विहार, इन्द्रिय–नियन्त्रण, शुद्ध बुद्धि, शांत बुद्धि, योग विज्ञान व चरित्र नियम व क्रियायें शामिल हैं)– का अनुकूलतम विकास होता है। (6) गांधी विश्व–व्यापक; अनंत–कालिक; सर्व–स्वीकार्य; सर्व–अनुकरणीय; सर्व–सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थितियों व परिवेश में

अनुपालनीय; तथा समस्त जड़–चेतन (मानव सन्निहित) के कल्याण के शिक्षा सुधारक अनूठे, अद्वितीय व नवीन धर्म व नीति–समुच्चय का संस्थापक व प्रवर्तक थे। (7) विश्व में धार्मिक, नैतिक, चरित्र शिक्षा के फलों का जिक्र और अपेक्षाओं का व्यक्त होना तो पाया गया है किन्तु उन फलों की उत्पत्ति करने वाली वस्तु/शक्ति/क्रियाओं के बारे में जिक्र नही है/अज्ञानता है। (8) विश्वस्तर पर एक नई व निष्पक्ष संस्था का सृजन हो जो 'सर्वधर्म–समभाव' के उत्पन्न करने व बनाये रखने का उत्तरदायित्व निभाये। (9) योग शिक्षा शैशवकाल से शुरु करें और क्रियाओं के अभ्यास द्वारा दी जानी चाहिये। (10) शारीरिक–सह–बौद्धिक–सह–आध्यात्मिक सायुज्य शिक्षा देना चाहिये। यह शिक्षा क्रियाओं व प्रयोगों आधरित हो; उक्त क्रियायें/प्रयोग बच्चों के उक्त परिवेश (व्यक्ति .. इत्यादि) में व उन पर आधारित हो; उक्त क्रियायें/प्रयोग अन्तर–विषयक ज्ञानवर्धन करे; उक्त क्रियाओं/प्रयोगों का चयन स्वयं शिक्षक करे और उन क्रियाओं/प्रयोंगों में निहित व्यवहारिक जीवन में काम में आने वाली वास्तविक स्थितियों को उत्पन्न कर अनेक उक्त विषयों (प्राकृतिक संसाधन ... इत्यादि) में निहित सार्थक ज्ञान का अभ्यास कराया जाये व प्रयोगों का अभ्यास करके बच्चा 'मास्टर' (Master) बने; 'मास्टर' बनाने का पूर्ण उत्तरदायी शिक्षक हो; समय–समय पर शिक्षक व उसकी उपलब्धि (बच्चे में मात्रात्मक व गुणात्मक व्यवहार परिवर्तन) का मूल्यांकन हो व तद्नुसार सुधारात्मक उपाय किये जायें। (11) शिक्षा पद्धति हेतु उचित तरह से योजना बनाने तथा क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। (12) संवाद उपागम का उपयोग शिक्षा अनुदेशन व शिक्षा प्रबन्धन दोनों क्षेत्रों में किया जाना चाहिये। (13) प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में आमूल परिवर्तन करने चाहिये।

(डेविड व सोऐस्ट 1999)[7] ने शिक्षा व सामाजिक कार्यो को महात्मा गांधी के विचारों के अनुकूल किये जाने की अनुशंसा की है। शांति, विकास तथा सामाजिक न्याय सम्बन्धी कार्यो को गांधी के विचारों व दर्शन के अनुसार किये जाने की भी अनुशंसा की है।

शोधकर्ताओं ने गांधी के पाँच मूल प्रयोगों की संकल्पनाओं का भी अध्ययन किया। ये पाँच मूल प्रयोग हैः– सत्याग्रह, अहिंसा, स्वदेशी, जात–मेहनत और समानता। शोधकर्ताओं ने हिंसा, दमन/ अत्याचार व शोषण की स्थिति से मुक्ति के लिये गांधी के सिद्यान्तों के अनुकूल सामाजिक कार्य करने हेतु एक पेशेवररूपी/ प्रोफेशनल शान्ति चेतना की जरूरत की अनुशंसा की है।

(थामस लिकोना 1991)[18] ने चरित्र शिक्षा के महत्व के निम्न दस कारणों का उल्लेख किया हैः– नवयुवकों द्वारा स्वयं व दूसरों को क्षति पहुचाना; जीवन हेतु मूल्य शिक्षा की अपरिहार्यता; माता–पिता व अन्य वातावरण से नैतिक शिक्षा प्राप्त करने की स्थिति न होना; सार्वजनिक नैतिक आधार की आवश्यकता, प्रजातन्त्र हेतु शिक्षा, मूल्यविहीन शिक्षा की संकल्पना अस्तित्वहीन, 'दूसरों के साथ ही जिएँ' भावना, स्कूल में मूल्य शिक्षा आवश्यक, नैतिक शिक्षा अपरिहार्य, मूल्य शिक्षा अपरिहार्य।

(धारेश्वर 2012)[8] ने 'फ्रेमिंग दि प्रीडिकामेन्ट ऑफ इण्डियन थॉट– गांधी', गीता तथा नैतिक कार्य, विषय पर शोध की है। शोधकर्ता ने गांधी रचित 'हिन्द स्वराज' पुस्तक में वर्णित भारतीय दुर्दशा का उल्लेख किया है। इसको समझाने के लिये शोधार्थी ने वास्तविक जीवन में घटित होने वाले तीन भिन्न उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। शोधार्थी ने सारांश में यह भी बताया कि इस दुर्दशा की स्थिति का हल गीता में गांधी ने कैसे पाया।

(बर्मन 2000)[3] ने चरित्र शिक्षा का आधार सेवा अधिगम बनाये जाने के लिये कहा; चरित्र शिक्षा की चिन्ताजनक खराब स्थिति को उजागर किया, तथा चरित्र शिक्षा के उत्थान हेतु सलाह दी है।

(बेन्सन व अन्य 2003)[2] ने धार्मिकता के विकास के बजाय आध्यात्मिकता पर ज्यादा ध्यान देने की अनुशंसा के कारणों में आध्यात्मिकता के प्रति बढ़ता हुआ रूझान, आध्यात्मिकता में अपेक्षाकृत अधिक अक्रिय सलंग्नता को होना पाया है।

(ब्लेनचॉट 2012)[4] ने कहा है कि महात्मा गांधी को ऐसीसी के सेन्ट फ्रान्सिस, मोसेस और इण्डियन क्राइस्ट के समतुल्य होने से अवगत कराया है। शोध में इण्डोनेशिया के बाली स्थान पर ग्लोबलायीजेशन के प्रभाव के बारे में भी गांधी के विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन किया है और अनुशंसा की है कि वर्तमान दशा में शिक्षा क्षेत्र में सामाजिक न्याय की दृष्टिकोण से पाठ्यक्रम की आवश्यकता है।

(मन्त्र डॉट ओ.आर.जी. डॉट इन 2015)[11] में कहा गया है कि योग भारतीय चिरन्तर परम्परा की प्रायोगिक अभिव्यक्ति है। योग मूलतया आध्यात्मिक लक्ष्य या प्राप्तव्य की पूर्ति कराता है, किन्तु साथ ही योग अपने अनुपालन से शारीरिक से शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य एवं आनन्द, सामाजिकसमरसता एवं विश्व कल्याण के भाव को भी साधक में जगा देता है। ये यौगिक मूल्य भी है एवं ये यौगिक अभ्यास भी है।

(मिश्रा 2008)[19] ने निम्न बिन्दुओं के आधार पर आज नैतिक शिक्षा की आवश्यकता को बताया है– मन की शांति के लिये, चरित्र निर्माण के लिये, बौद्धिक शिक्षा, आर्थिक, अस्त–व्यस्त से छुटकारा पाने हेतु, किशोर एवं युवाओं के लिये, अनुशासित जीवन के लिये, राष्ट्रीय एकता एवं अन्तराष्ट्रीय सद्भाव के विकास के लिये।

(रामानाथन 2006)[28] ने गुजरात में घटित दो भीषण हानिकारक घटनाओं और उनसे उबरने हेतु स्थानीय लोगों द्वारा किये गये योगदान को महात्मा गांधी के असहयोग तथा सामाजिक–आर्थिक शिक्षा के सन्दर्भ में अध्ययन किया। उन्होने पाया कि परम्परागत शिक्षा पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

(रोएलकेपारटेन व अन्य 2005)[29] ने आध्यात्मिक विकास को मानव विकास का अति आवश्यक प्रक्रिया व साधन पाया है और यह भी पाया कि सामाजिक विज्ञान द्वारा इस सशक्त पक्ष को लम्बे समय तक अनदेखा किया है।

(लाल 2008)[17] ने गांधी की सार्वभौमिक नीति तथा नारीवाद विषय पर शोध की है। शोधार्थी ने पाया कि (1) पश्चिमी परम्परा की भाँति गांधी की नीति सार्वभौमिक, पक्षपातहीन तथा विमोह सम्बन्धी है, (2) नारीवाद के संवेदना, अनुभव व पराश्रित केन्द्रित नैतिक निष्कर्षो से गांधी की नीति में मेल है, किन्तु दोनों में अन्तर भी है और इसको समझना महत्वपूर्ण है। शोधकर्ता ने यह दर्शाया है कि अन्य लोग से भिन्नता से स्नेह उत्पन्न होता है, किन्तु यह स्नेह तब ही महत्वपूर्ण है जब कि इसके द्वारा हम सभी के प्रति निस्वार्थ प्रेमरूपी नैतिकता के शिखर पर पहुँचे।

(वाघमोर 2004)[44] ने विकास सम्बन्धी गांधी के विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन किया। शोधकर्ता ने पाया कि गांधी के विकास विषयक विचारों के प्रमुख प्रभावों को दो रूप में वर्णित किया जा सकता हैः– आधुनिकता विरोधी तथा उत्तरआधुनिकता मतवर्ग। नीति, सक्रियतावाद तथा विकास कार्यो में गांधी के विचारों का प्रभाव है। गांधी और गांधीवाद का विश्लेषण अधिक प्रचलित हुआ है, विशेषतः पश्चिम जगत में। किन्तु ऐसा विश्लेषण वास्तविक गांधीवादी नेतृत्व को उजागर नही करता है। शोधकर्ता ने यह भी पाया कि आधुनिक विकासवाद ने गांधीवादी विकास विचारों व कार्यो को दबा रखा है।

(वेबर 2004)[45] ने 'शांति विषयक आधुनिक शोध के पिता', जोहन गाल्टंग के शांति विषयक शोध पर गांधी का प्रभाव के बारे में अध्ययन किया। यह पाया गया कि आधुनिक शांति शोध पर गाल्टंग के योगदान को तब तक नही समझा जा सकता जब तक कि गाल्टंग के विचारों पर गांधी के प्रभाव को नही समझ लिया जाय।

(शर्मा 2014)[34] ने महाकाव्यीन उपवास और उथले उपनेत्र– 'भ्रष्टाचार विरोधी भारत' अभियान, इसकी आलोचना तथा गांधी पुनर्निर्माण विषयक शोध किया। शोध में बताया गया कि भारत में सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरोध में 'इण्डिया अगेन्स्ट करपशन' (आई.ए.सी.) नामक समूह द्वारा चलाये गये अभियान को देखा गया।

इसके सन्दर्भ में गांधी की भूख हड़ताल की विरोध करने की युक्ति इस्तेमाल किये जाने की आलोचना की गयी। शोधकर्ता ने विवेचना की है कि ऐसी आलोचनाओं ने गांधी को और गांधीवाद को एकविमीय, अस्थिभूत व व्यापकरूप से अनोखे विषयरूप में पुनर्स्थापित किया है। और ऐसा करने में उन लोगों ने विरोधों, प्रयोगों तथा उभयवृत्ततिता; जिनसे गांधी का जीवन पहचाना जाता है; को छिपाया है। वास्तविक गांधी को पुनउत्पादित करने को या संरक्षण करने की अभिलाषा को दबा देने की आवश्यकता है ताकि उनके आचरणों को आज सामाजिक आन्दोलनों द्वारा नयेपन से लाया जा सके और उत्साहपूर्ण बनाया जा सके।

(शेइफर 2001)[33] सी.ई.पी. वाशिंगटन ने स्पष्ट किया छात्रों में नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक व चारित्रिक विकास पुस्तकीय ज्ञान से या चर्चाओं से नहीं आता, बल्कि नियमित शैक्षणिक पाठ्यचर्या, शैक्षणिकोत्तर गतिविधियों व शाला–संस्कृति गतिविधियों को चरित्र शिक्षा से तर–बतर कर देने से होता है। शिक्षा का अर्थ आकादमिक शिक्षा से कही अधिक व्यापक है।

(सरकार 2008)[31] ने भारत में 20वीं शताब्दी में 'विकासात्मक राष्ट्रवाद' और 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' विषय पर शोध की है। यह पाया गया कि विकासात्मक राष्ट्रवाद में संस्कृति और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के तत्व होते हैं। इसलिये 'विकास' और 'संस्कृति' का सावधानीपूर्वक समझना आवश्यक हैं। जरूरत बताई गयी है इस बात की कि भारत में गरीबी के साथ–साथ ही विकासात्मक और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अध्ययन उचित है।

(सलमी 2009)[30] ने पाया कि विश्व के अनेक भाग, सामाजिक बौद्धिक समृद्धता का मुख्य स्थान स्कूल भी प्रायः, दुख व पीड़ा के स्थल हैं। हिंसा व शिक्षा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण प्रश्न उबरते हैं। शोधकर्ता ने प्रश्न उठाये कि (1) किस प्रकार की हिंसा का स्कूली स्थिति में मुकाबला किया जा सकता है? (2) ऐसी हिंसा कैसे

विद्यमान हैं? (3) क्या ऐसी हिंसा सहसा उत्पन्न होती हैं या वे किन्ही विशिष्ट कारकों व स्थिति से सम्बन्धित हैं? (4) उनको कम करने या न घटित हो सकने के लिये क्या किया जा सकता हैं? इन प्रश्नों के सन्दर्भ में शोधार्थी ने स्कूल प्रणाली में घटित हो सकने वाली विभिन्न प्रकार की हिंसा को विधिवत ढंग से पहचानने हेतु विश्लेषण का ढॉँचा बनाने का प्रस्ताव किया है। यह भी दर्शाया गया है कि हिंसा का उक्त वर्गीकरण का किस प्रकार अनुप्रयोग किया जा सकता है। अन्त में शोधार्थी ने उन तरीकों को व्यक्त किया है जिनके माध्यम से स्कूलों के सन्दर्भ सहित अन्यत्र स्थानों से हिंसा से निपटने हेतु शिक्षा का सकारात्मक शक्ति के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

(हार्ट 2006)[10] ने वर्णनात्मक व गुणात्मक साक्ष्यों के आधार पर आध्यात्मिकता में अनेक फायदों का होना पाया और आध्यात्मिक शिक्षा को आवश्यक मानते हुए उसमें सुधार हेतु सुझाव दिये है।

3.0.0 उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य, गांधी रचित "हिन्द स्वराज" के "शिक्षा" अध्याय तथा "मंगल प्रभात" के परिप्रेक्ष्य में "नीति शिक्षा" की संकल्पना व उसका समाधान गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन द्वारा ज्ञात करना है।

इस शोधकार्य द्वारा निम्न शोध प्रश्नों का उत्तर खोजा जायेगाः-

1. 'नीति शिक्षा' का क्या अर्थ हैं?

2. 'नीति शिक्षा' क्या 'धर्म शिक्षा' का पर्याय है?

3. 'नीति शिक्षा' में किस / (किन) नीति (नीतियों) की शिक्षा दी जायें? 'नीति शिक्षा' के अन्तर्गत दी जाने वाली नीतियों के अर्थ क्या है?

4. (क) 'नीति शिक्षा' लोगों को किस आयुकाल में दी जाये? अर्थात्, यदि लोगों के किन्ही विशेष आयुकाल में 'नीति शिक्षा' दी जानी है,

तो प्रत्येक आयुकाल में किस प्रकृति की 'नीति शिक्षा' दी जाये ?

(ख) 'नीति शिक्षा' क्या किसी विशेष प्रकार की शिक्षा के साथ दी जाये ? यदि हाँ, तो 'नीति शिक्षा', किन विशेष प्रकारों की शिक्षा के साथ दी जाये और किस गहराई की हद तक दी जाये ?

5. क्या 'नीति शिक्षा' अध्यापन–प्रशिक्षणार्थियों के लिये भी है ?

6. 'नीति शिक्षा' क्या बेरोजगारी की स्थिति का कारक नही होगी और क्या 'नीति शिक्षा' विद्यमान बेरोजगारी को दूर करने में सहायक होगी ?

7. क्या 'नीति शिक्षा' भ्रष्टाचार पर काबू पा सकेगी ?

8. क्या 'नीति शिक्षा' आतंकवाद व हिंसा पर काबू पा सकेगी ?

9. क्या 'नीति शिक्षा' गरीबी की स्थिति पर काबू पा सकेगी ?

10. क्या 'नीति शिक्षा' वैज्ञानिक व तकनीकी विकास में बाधा नही होगी ?

11. क्या 'नीति शिक्षा' वैश्वीकरण में बाधा नही होगी ?

12. 'नीति शिक्षा' क्या 'सकल राष्ट्रीय खुशहाली' (ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस–जी.एन.पी.) का पर्याय है ?

4.0.0 शोधविधि तथा कार्य–योजना

इस शोध हेतु गुणात्मक व दार्शनिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जायेगा। महान लेखकों, विद्वानों, संगठनों, संस्थाओं, आन्दोलनों, सरकारों आदि के विचारों, धारणाओं, व्यवहारों, सम्प्रत्तययों आदि का संकलन व आलोचनात्मक, तार्किक ढंग से तुलना, अध्ययन, विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन करके निष्कर्ष व सुझाव प्रस्तुत किये जायेंगे। इसके अन्तर्गत यथा आवश्यकता विषयवस्तु विश्लेषण भी सम्मिलित है।

शैक्षिक चिन्तन व उसका विश्लेषण करने हेतु विश्वविख्यात

प्रोफेसर बी.के. पासी व डा. (श्रीमति) सुभाषिनी पासी द्वारा ईजाद की हुई संवाद–पुनर्संवाद विधि/ उपकरण का भी उपयोग किया जायेगा।

दैनिक रूप से पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, विश्वकोषों, प्रकाशित व अप्रकाशित अनुसंधान प्रबन्धों, सारांश–पत्रिकाएँ, पत्रकों, विचार–विमर्शो, शब्दकोषों, डायरी, आत्मकथा, संकलनों आदि का अध्ययन कर नोट्स तैयार करने की योजना है। विख्यात अध्यापकों, चिन्तकों, मार्गदर्शक से भी लगातार विचार–विमर्श करते रहने की योजना है जब तक की अनुसंधान प्रबन्ध स्वीकृत नही हो जाता है। ये सभी सूचनाएँ व ज्ञान प्रदत्त बतौर होगें तथा स्त्रोत विश्वविस्तारित पूर्वोक्त महान लेखक, विद्वान, चिन्तक आदि के विचार, अनुभव, सिद्यान्त आदि होगें।

द्विवर्षीय अवधि में कार्य पूर्णरूपेण समाप्त करने की योजना के अन्तर्गत अन्तिम 6 महिनों में शोध प्रबन्ध समरी (संक्षेप) तथा शोध प्रबन्ध (थीसिस) को विश्वविद्यालय को प्रस्तुत करने का कार्य रहेगा।

5.0.0 उपयोगिता

बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और अन्तरात्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का विकास करने वाली शिक्षा व शिक्षा प्रणाली की स्थापना करने में शोध सहायक होगा। मानव, मानवीयता, नीति, और वसुधैव कुटुम्ब के वास्तविक जगत में चलन में परिणिति होने की स्थिति बनेगी।

6.0.0 सीमांकन

इस शोध की सीमा गांधी रचित "हिन्द स्वराज" के "शिक्षा" अध्याय तथा "मंगल प्रभात" के परिप्रेक्ष्य में "नीति शिक्षा" सम्बन्धी विचारों का अध्ययन गुणात्मक व दार्शनिक अध्ययन द्वारा करने तक ही है, और वो भी पूर्वोक्त 12 शोध प्रश्नों तक।

7.0.0 संदर्भ

1 Asthana Sanjay, (2008), Religion and Secularism as Embedded Imaginaries- A Study of Indian Television Narratives. Critical Studies in Media Communication, 25-3, 304-323

2 Benson P. L., Roehlkepartain E. C., & Rude S. P., (2003), Spiritual development in childhood and adolescence: Toward a field of inquiry. Applied Developmental Science, 7, 204-212.

3 Berman S., (2000), Service learning and character education: One plus one is more than two. Denver, CO: Education Commission of the States.

4 Blanchot Maurice, (2012), Mahatma Gandhi. Journal for Cultural Research, 16-4, 366-370

5 Chakrabarty Dipesh, (2012), From civilization to globalization- the 'West' as a shifting signifier in Indian modernity. Inter-Asia Cultural Studies, 13-1, 138-152

6 Crawford M., & Rossiter G., (2006), Reasons for living: Education and young people's search for meaning, identity, and spirituality. A handbook; Camberwell, Victoria: ACER.

7 David Gerson & Soest Dorothy Van, (1999), Relevance of Gandhi to a peaceful and just world society. Lessons for social work practice and education, New Global Development, 15-1, 8-22

8 Dhareshwar Vivek, (2012), Framing the Predicament of Indian Thought- Gandhi, the Gita, and Ethical Action. Asian Philosophy- An International Journal of the Philosophical Traditions of the East, 22-3, 257-274

9 Gier Nicholas F., (2001), Confucius, Gandhi and the Aesthetics of Virtue, Asian Philosophy. An International Journal of the Philosophical Traditions of the East, 11:1, 41-54

10 Hart T., (2006), Spiritual experiences and capacities of children and youth. In E.C. Roehlkepartain, P.E. King, L. Wagener & P. Benson (Eds.), The handbook of spiritual development in childhood and adolescence; Thousand Oaks, CA: Sage.

11 http://www.mantra.org.in/yoga/myweb/yoga_research.htm (downloaded on 15-April-2015)

12 Jain A.K., (2010), Humble, humane and harmonious houses of Laurie Baker. International Journal of Environmental Studies, 67-5, 781-794

13 Johnson Steve, (2015), An Education in Ethics: Students often know the right thing to do. How can schools help them to do it?. Markkula Center for Applied Ethics, Santa Clara University. http://www.scu.edu/ethics/publications/iie/v10n1/education.html (downloaded on 15-April-2015)

14 Joshee Reva, (2012), Challenging neoliberalism through Gandhian trusteeship. Critical Studies in Education, 53-1, 71-82

15 Kingdon Geeta Gandhi and Knight John, (2006), Subjective well-being poverty vs. Income poverty and capabilities poverty? The Journal of Development Studies, 42-7, 1199-1224

16 Kumar Aishwary, (2014), Satyagraha and the place of the animal: Gandhi's distinctions. Social History, 39-3, 359-381

17 Lal Sanjay, (2008), Gandhi's Universal Ethic and Feminism- Shared Starting Points but Divergent Ends. Asian Philosophy- An International Journal of the Philosophical Traditions of the East, 18-2, 185-195

18 Lickona T., (1991), Educating for character: How our schools can teach respect and responsibility, New York: Bantam Books.

19 Mishra M.K., (2008), Sociological Foundation of Education. Nalanda Open University, Patna.

20 NCDPI (North Carolina Department of Public Instruction), (2006), Character Education Informational Handbook and Guide II. North Carolina: State Board of Education.

21 NCGA (North Carolina General Assembly), (2001), Overview of the Student Citizen Act of 2001. General Assembly of North Carolina Session 2001, North Carolina, [www.ncga.state.nc.us]

22 Ofsted (Office for Standards in Education), (1994), Spiritual, Moral, Social and Cultural Development. An Ofsted Discussion Paper, London: Ofsted

23 Ofsted (Office for Standards in Education), (1996), Evaluating Educational Inclusion: Guidance for Inspectors and Schools, London: Ofsted.

24 Ofsted (Office for Standards in Education), (2004), Promoting and evaluating pupils' spiritual, moral, social and cultural development. HMI 2125; London: Ofsted.

25 Passi B. K., Thakkar Priyanka & Gupta M.C., (2012), Ill-Directed Education in India. Proceedings of THIRD PEOPLE EDUCATION CONGRESS; No.19-23 2012; Guj. Vidyapeeth, Ahmedabad.

26 Passi B. K., Thakkar Priyanka & Gupta M.C., (2013), First Deserve, Then Desire. Proceedings of 'World Conference of GERA: 'Gandhian Thought and Globalisation' 2-3 Sep 2013, T N Centre, Kathmandu, Nepal.

27 Passi B. K., & Thakkar Priyanka, (2012), Dialogue and Re-dialogue As Shifting Paradigm In Educational Research. Proceedings of THIRD PEOPLE EDUCATION CONGRESS; No.19-23 2012; Guj. Vidyapeeth, Ahmedabad.

28 Ramanathan Vaidehi, (2006), Gandhi, Non-Cooperation, and Sociocivic Education in Gujarat, India- Harnessing the Vernaculars. Journal of Language, Identity & Education, 5-3, 229-250

29 Roehlkepartain E. C., King P. E., Wagener, L. and Benson, P. L. (2005): The Handbook of Spiritual Development in Childhood and Adolescence; SAGE Publications, Inc.

30 Salmi J., (2009), Violence, integrity and education. Global Crime, 10-4, 396-415

31 Sarkar Sumit, (2008), Nationalism and poverty- discourses of development and culture in 20th century India. Third World Quarterly, 29-3, 429-445

32 SCAA (School Curriculum and Assessment Authority), (1996), Education for Adult Life: The Spiritual and Moral Development of Young People. London: School Curriculum and Assessment Authority. In Office for Standards in Education (Ofsted, 2004), 'Promoting and evaluating pupils' spiritual, moral, social and cultural development'; London: Ofsted.

33 Schaeffer Esther F., (2001), Is Character Development a Policy Issue? In Berreth, Diane G. & Ernst, Don: A Common Goal; Character Education; Number 25; June 2001.

34 Sharma A., (2014), Epic Fasts and Shallow Spectacles- The 'India Against Corruption' Movement, its Critics, and the Re-Making of 'Gandhi'. South Asia: Journal of South Asian Studies, 37-3, 365-380

35 Thakkar Priyanka & Passi B. K., (2012), Ucha Gunvatta Hetu Apariharya Saikshik Pathyacharya. Seminar on 'Quality Enhancement in Higher Education Through Autonomous Status-A Necessity', Kasturba Rural Institute, Indore, Sep.29, 2012.

36 Thakkar Priyanka, (2012), Hind Swaraj Me Nihit Gandhi Sikhsha Darshan Ke Prasangikta-Ek Adhyan. Unpublished Dissertation for M.Ed. Degree, DAVV, Indore.

37 Thakkar Priyanka, (2014), Environmental Education To Teacher

Trainees/Students: Why & How? International Journal of Renewable Energy Exchange; ISSN 2321-1067; Vol.3 Issue 1; PP. 172-179.

38 Thakkar Priyanka, (2014), Hind Swraj Me Nihit Gandhi Siksha Darshan Ke Prasangikta-Ek Adhyan. Compendium of Interdisciplinary Research Papers, pp. 465-470; ISBN 978-81-926111-2-9.

39 Thakkar Priyanka, (2014), ICT A PROSPECT FOR EDUCATIONAL TRANSFORMATION. International Journal of Renewable Energy Exchange; ISSN 2321-1067; Vol.3 Issue 1; pp. 27-33.

40 Thakkar Priyanka, (2014), Requirement of Open Educational Resources in Context of Higher Education. Procedings: 'National Semiar on Importance of ICT in Contemporary Education', pp. 31-32; Anand Institute of Management, Bhopal.

41 Thakkar Priyanka, (2015), Lack of Evaluation of Effectiveness of Teachers of Disabled and Non-disabled Children in India. The International Research Journal of Social Sciences and Humanities, Vol..4, No.2, February, pp.1-13; ISSN 2320-4702.

42 Thakkar Priyanka, (2015), MANDATORY EDUCATION INVARIABLY REQUIRES ENCYCLOPEDIC EDUCATION SYSTEM AND GOVERNMENT LEADERSHIP REVOLUTIONIZING IT. Research Link, 132A(2), Vol-XIV(1), March 2015, [ISSN-0973-1628 (An International, Registered & Referred Monthly Journal)].

43 Thakkar Priyanka, (2015), Swachh Bharat [clean india] Mission – an analytical study. National Conference on "Challenges & Opportunities towards Clean & Green India", JJTU University, Jhunjhunu, Rajasthan-12-14 March 2015.

44 Waghmore S., (2004), Gandhi's Thoughts on Development. A Critical Appraisal. New Global Development, 20-2, 55-70

45 Weber Thomas, (2004), The impact of Gandhi on the development of Johan Galtung's peace research. Global Change, Peace & Security- formerly Pacifica Review- Peace, Security & Global Change, 16-1, 31-43